

कार्यपालिका

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» कार्यपालिका क्या है?

प्रश्न 1 (आसान). कार्यपालिका का मुख्य कार्य क्या है?

उत्तर – कानूनों को लागू करना और प्रशासन चलाना।

प्रश्न 2 (आसान). सरकार के किन्हीं दो अंगों के नाम बताइए।

उत्तर – विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका।

प्रश्न 3 (मध्यम). क्या प्रधानमंत्री अकेले कार्यपालिका कहलाते हैं? कारण सहित समझाइए।

उत्तर – नहीं, प्रधानमंत्री अकेले कार्यपालिका नहीं कहलाते। कार्यपालिका में प्रधानमंत्री के साथ-साथ राष्ट्रपति, मंत्री और देश के सभी प्रशासनिक अधिकारी (सिविल सेवक) भी शामिल होते हैं, क्योंकि ये सभी मिलकर कानूनों को लागू करने और प्रशासन चलाने का काम करते हैं।

प्रश्न 4 (कठिन). आपके अनुसार, किसी भी देश के लिए कार्यपालिका इतनी महत्वपूर्ण क्यों है?

उत्तर – कार्यपालिका किसी भी देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विधायिका द्वारा बनाए गए कानूनों को व्यावहारिक रूप से लागू करती है। इसके बिना कानून सिर्फ कागजों पर रह जाएंगे और उनका कोई उपयोग नहीं होगा। यह देश में शांति, व्यवस्था और विकास सुनिश्चित करती है, जिससे नागरिकों का जीवन बेहतर होता है।

» कार्यपालिका के प्रकार: सामूहिक और एकल नेतृत्व

प्रश्न 5 (आसान). किस प्रकार की कार्यपालिका में राष्ट्रपति राज्य और सरकार दोनों का प्रधान होता है?

उत्तर – अध्यक्षतात्मक कार्यपालिका

प्रश्न 6 (आसान). भारत में किस प्रकार का नेतृत्व है - सामूहिक या एकल?

उत्तर – सामूहिक नेतृत्व

प्रश्न 7 (मध्यम). अध्यक्षतात्मक और संसदीय प्रणाली के बीच मुख्य अंतर क्या है?

उत्तर – अध्यक्षतात्मक में एकल नेतृत्व (राष्ट्रपति), संसदीय में सामूहिक नेतृत्व (प्रधानमंत्री व मंत्रिमंडल) और विधायिका के प्रति जवाबदेही।

प्रश्न 8 (कठिन). अर्ध-अध्यक्षतात्मक प्रणाली में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की भूमिकाएं कैसे विभाजित होती हैं? कोई एक उदाहरण दो।

उत्तर – अर्ध-अध्यक्षतात्मक प्रणाली में राष्ट्रपति देश का प्रधान होता है और उसके पास कुछ वास्तविक शक्तियाँ होती हैं, जबकि प्रधानमंत्री सरकार का प्रधान होता है और संसद के प्रति जवाबदेह होता है। उदाहरण: फ्रांस।

» संसदीय कार्यपालिका: विशेषताएं और उदाहरण

प्रश्न 9 (आसान). संसदीय कार्यपालिका में सरकार का वास्तविक प्रमुख कौन होता है?

उत्तर – प्रधानमंत्री

प्रश्न 10 (आसान). भारत में देश का औपचारिक प्रमुख कौन है?

उत्तर – राष्ट्रपति

प्रश्न 11 (मध्यम). संसदीय कार्यपालिका में प्रधानमंत्री किसके प्रति जवाबदेह होता है?

उत्तर – विधायिका (संसद)

प्रश्न 12 (कठिन). एक काल्पनिक देश में, अगर राजा देश का प्रमुख है पर सारे बड़े फैसले एक प्रधानमंत्री लेता है जिसे जनता ने चुना है, तो यह किस प्रकार की कार्यपालिका है?

उत्तर – यह संसदीय कार्यपालिका का उदाहरण है, क्योंकि वास्तविक शक्ति प्रधानमंत्री के पास है और राजा केवल औपचारिक प्रमुख है।

» **अध्यक्षात्मक और अर्ध-अध्यक्षात्मक कार्यपालिका: विशेषताएं और उदाहरण**

प्रश्न 13 (आसान). अध्यक्षीय प्रणाली में 'राज्य और सरकार दोनों का प्रधान' कौन होता है?

उत्तर – राष्ट्रपति

प्रश्न 14 (आसान). अमेरिका में कौन सी कार्यपालिका प्रणाली लागू है?

उत्तर – अध्यक्षीय कार्यपालिका

प्रश्न 15 (मध्यम). अर्ध-अध्यक्षात्मक प्रणाली में 'राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री दोनों होते हैं', इस कथन को समझाएं।

उत्तर – अर्ध-अध्यक्षात्मक प्रणाली में राष्ट्रपति देश का संवैधानिक प्रमुख होता है, जबकि प्रधानमंत्री सरकार का प्रमुख होता है। दोनों के पास अलग-अलग शक्तियाँ और जिम्मेदारियाँ होती हैं। उदाहरण के लिए, 'राष्ट्रपति देश का प्रमुख होता है' और 'प्रधानमंत्री सरकार का प्रमुख होता है'।

प्रश्न 16 (कठिन). क्या अध्यक्षीय कार्यपालिका में 'राष्ट्रपति विधायिका वेफ प्रति जवाबदेह होता है'? अपने उत्तर का कारण बताएं।

उत्तर – नहीं, अध्यक्षीय कार्यपालिका में 'राष्ट्रपति विधायिका वेफ प्रति जवाबदेह नहीं होता' है। ऐसा इसलिए क्योंकि राष्ट्रपति का चुनाव आमतौर पर 'प्रत्यक्ष मतदान से होता है' और वह अपनी नीतियों और निर्णयों के लिए सीधे जनता के प्रति जवाबदेह होता है, न कि विधायिका के प्रति।

» **भारत में संसदीय कार्यपालिका का चुनाव**

प्रश्न 17 (आसान). भारत में किस प्रकार की कार्यपालिका व्यवस्था अपनाई गई है?

उत्तर – संसदीय कार्यपालिका व्यवस्था।

प्रश्न 18 (आसान). संसदीय कार्यपालिका में वास्तविक शक्तियाँ किसके पास होती हैं?

उत्तर – प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद् के पास।

प्रश्न 19 (मध्यम). अध्यक्षीय कार्यपालिका में किस खतरे की संभावना अधिक होती है?

उत्तर – व्यक्ति पूजा का खतरा।

प्रश्न 20 (कठिन). संविधान निर्माताओं ने संसदीय प्रणाली को क्यों चुना, दो मुख्य कारण बताइए?

उत्तर – जनता के प्रति सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करने और कार्यपालिका पर विधायिका के प्रभावी नियंत्रण के लिए।

» **राष्ट्रपति की शक्तियाँ और संवैधानिक स्थिति**

प्रश्न 21 (आसान). भारतीय संविधान के अनुसार, संघ की कार्यकारी शक्तियाँ औपचारिक रूप से किसे दी गई हैं?

उत्तर – राष्ट्रपति को।

प्रश्न 22 (आसान). राष्ट्रपति वास्तविक रूप में अपनी शक्तियों का प्रयोग किसकी सलाह पर करते हैं?

उत्तर – प्रधानमंत्री के नेतृत्व वाली मंत्रिपरिषद् की सलाह पर।

प्रश्न 23 (मध्यम). संविधान के अनुसार, राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद् की सलाह को एक बार क्या करने के लिए कह सकते हैं?

उत्तर – पुनर्विचार करने के लिए।

प्रश्न 24 (कठिन). राष्ट्रपति कब प्रधानमंत्री की नियुक्ति में अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हैं? उदाहरण सहित समझाएं।

उत्तर – जब लोकसभा चुनाव के बाद किसी भी दल या गठबंधन को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलता, तब राष्ट्रपति अपने विवेक का प्रयोग करके यह तय करते हैं कि कौन सा नेता सरकार बना सकता है और किसे बहुमत का समर्थन प्राप्त है। जैसे 1998 में राष्ट्रपति नारायणन ने अटल बिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री नियुक्त किया और उन्हें 10 दिन के भीतर विश्वास मत हासिल करने को कहा।

» राष्ट्रपति के विशेषाधिकार

प्रश्न 25 (आसान). राष्ट्रपति द्वारा मंत्रिपरिषद् की सलाह को पुनर्विचार के लिए लौटाना कौन सा विशेषाधिकार है?

उत्तर – मंत्रिपरिषद् की सलाह पर पुनर्विचार का आग्रह

प्रश्न 26 (आसान). किस परिस्थिति में राष्ट्रपति प्रधानमंत्री की नियुक्ति में अपने विवेक का प्रयोग करते हैं?

उत्तर – जब लोकसभा में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत न मिले।

प्रश्न 27 (मध्यम). वीटो शक्ति का क्या अर्थ है और 'पॉकेट वीटो' इससे कैसे अलग है?

उत्तर – वीटो शक्ति का अर्थ है राष्ट्रपति द्वारा किसी विधेयक पर स्वीकृति में देरी करना या उसे अस्वीकार करना। 'पॉकेट वीटो' में राष्ट्रपति विधेयक पर कोई निर्णय नहीं लेते और उसे अनिश्चित काल के लिए अपने पास रख लेते हैं, जिससे वह कानून नहीं बन पाता। 'The President can simply keep the bill pending indefinitely.'

प्रश्न 28 (कठिन). भारत में गठबंधन सरकारों के दौर में राष्ट्रपति के विशेषाधिकारों का महत्व क्यों बढ़ गया है? 'The importance of President's office has increased considerably' – इस कथन की व्याख्या करें।

उत्तर – गठबंधन सरकारों के दौर में, जब किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलता, तो प्रधानमंत्री की नियुक्ति एक जटिल प्रक्रिया बन जाती है। ऐसे में राष्ट्रपति को 'यह निर्णय करना होता है कि वह किसे प्रधानमंत्री नियुक्त करें', किसे बहुमत का समर्थन प्राप्त है या कौन सरकार बना सकता है। 'In this situation, President has to decide who has the majority support or who can form and run the government.' इस स्थिति में राष्ट्रपति का पद बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उन्हें अपने विवेक का उपयोग करके एक स्थिर सरकार बनाने में मदद करनी होती है।

» भारत का उपराष्ट्रपति

प्रश्न 29 (आसान). भारत के उपराष्ट्रपति का कार्यकाल कितने वर्ष का होता है?

उत्तर – 5 वर्ष

प्रश्न 30 (आसान). उपराष्ट्रपति इनमें से किस सदन का पदेन अध्यक्ष होता है - लोकसभा या राज्यसभा?

उत्तर – राज्यसभा

प्रश्न 31 (मध्यम). राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव के निर्वाचक मंडल (electoral college) में मुख्य अंतर क्या है?

उत्तर – राष्ट्रपति के चुनाव में संसद और राज्य विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य भाग लेते हैं, जबकि उपराष्ट्रपति के चुनाव में केवल संसद के सदस्य ही भाग लेते हैं।

प्रश्न 32 (कठिन). उपराष्ट्रपति को उसके पद से हटाने की प्रक्रिया क्या है?

उत्तर – उपराष्ट्रपति को हटाने के लिए सबसे पहले राज्यसभा में बहुमत से प्रस्ताव पास किया जाता है, और फिर उस प्रस्ताव पर लोकसभा की सहमति लेनी आवश्यक होती है।

» प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद् की भूमिका

प्रश्न 33 (आसान). भारत में 'वास्तविक कार्यकारी शक्तियाँ' किसके पास होती हैं?

उत्तर – प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद् के पास।

प्रश्न 34 (आसान). मंत्रिपरिषद् 'सामूहिक रूप से किसके प्रति जवाबदेह' होती है?

उत्तर – लोकसभा के प्रति।

प्रश्न 35 (मध्यम). संविधान का कौन सा अनुच्छेद कहता है कि राष्ट्रपति को सहायता और सलाह देने के लिए एक मंत्रिपरिषद् होगी, जिसका प्रधान प्रधानमंत्री होगा?

उत्तर – अनुच्छेद 74।

प्रश्न 36 (कठिन). क्या राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद् की किसी सलाह को पूरी तरह से नकार सकते हैं? समझाइए।

उत्तर – नहीं, राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद् को सिर्फ एक बार सलाह पर पुनर्विचार करने के लिए कह सकते हैं। लेकिन पुनर्विचार के बाद दी गई सलाह को उन्हें मानना ही पड़ता है।

» मंत्रिपरिषद् का आकार और सामूहिक उत्तरदायित्व

प्रश्न 37 (आसान). 91वां संविधान संशोधन किस वर्ष हुआ था?

उत्तर – 2003

प्रश्न 38 (आसान). मंत्रिपरिषद् किसके प्रति सामूहिक रूप से उत्तरदायी होती है?

उत्तर – लोकसभा

प्रश्न 39 (मध्यम). अगर एक मंत्री को लोकसभा में विश्वास मत नहीं मिलता तो क्या पूरी मंत्रिपरिषद् को इस्तीफा देना पड़ता है?

उत्तर – हाँ, क्योंकि मंत्रिपरिषद् सामूहिक उत्तरदायित्व के सिद्धांत पर काम करती है।

प्रश्न 40 (कठिन). 91वें संशोधन से पहले मंत्रिपरिषद् के आकार को लेकर क्या समस्या थी?

उत्तर – संशोधन से पहले मंत्रिपरिषद् का आकार बहुत बड़ा हो जाता था क्योंकि कोई स्पष्ट बहुमत न मिलने पर सांसदों को मंत्री पद का लालच देकर समर्थन हासिल किया जाता था।

» प्रधानमंत्री की शक्तियाँ और गठबंधन राजनीति का प्रभाव

प्रश्न 41 (आसान). प्रधानमंत्री की मृत्यु या त्यागपत्र से क्या होता है?

उत्तर – पूरी मंत्रिपरिषद् भंग हो जाती है।

प्रश्न 42 (आसान). पंडित नेहरू ने प्रधानमंत्री को क्या संज्ञा दी थी?

उत्तर – सरकार की केंद्रीय धुरी।

प्रश्न 43 (मध्यम). गठबंधन सरकार में प्रधानमंत्री की भूमिका एक नेता से बदलकर क्या हो जाती है?

उत्तर – गठबंधन सरकार में प्रधानमंत्री की भूमिका एक नेता से बदलकर मध्यस्थ की हो जाती है।

प्रश्न 44 (कठिन). प्रधानमंत्री की शक्तियों के किन्हीं तीन स्रोतों का उल्लेख करें और बताएं कि गठबंधन राजनीति में उन पर क्या असर पड़ सकता है।

उत्तर – शक्ति के स्रोत: 1. मंत्रिपरिषद् पर नियंत्रण, 2. लोकसभा का नेतृत्व, 3. नीतियों का निर्धारण। गठबंधन राजनीति में: मंत्रिपरिषद् चयन में सहयोगी दलों की बात माननी पड़ती है; लोकसभा में बहुमत बनाए रखने के लिए सहयोगी दलों पर निर्भरता बढ़ती है; नीतियों को अकेले तय नहीं कर सकते, सहयोगी दलों से समझौता करना पड़ता है।

» स्थायी कार्यपालिका: नौकरशाही (सिविल सेवा)

प्रश्न 45 (आसान). स्थायी कार्यपालिका का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर – नौकरशाही या सिविल सेवा

प्रश्न 46 (आसान). क्या सिविल सेवा के सदस्य चुनाव लड़ते हैं?

उत्तर – नहीं, वे चुनाव नहीं लड़ते।

प्रश्न 47 (मध्यम). मंत्री और नौकरशाही के बीच मुख्य अंतर क्या है?

उत्तर – मंत्री 'चुने हुए प्रतिनिधि' होते हैं और 'अस्थायी' होते हैं, जबकि नौकरशाही के सदस्य 'भर्ती किए गए' अधिकारी होते हैं और 'स्थायी' होते हैं।

प्रश्न 48 (कठिन). सिविल सेवा को राजनीतिक रूप से तटस्थ क्यों होना चाहिए?

उत्तर – ताकि वे बिना किसी 'राजनीतिक झुकाव' के 'निष्पक्ष रूप' से काम कर सकें और हर 'सरकार' की नीतियों को 'समान दक्षता' से लागू कर सकें, चाहे 'सत्ता' में कोई भी 'पार्टी' हो।

» सिविल सेवाओं का वर्गीकरण और भर्ती

प्रश्न 49 (आसान). निम्नलिखित में से कौन-सी सेवा अखिल भारतीय सेवा का उदाहरण है: भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) या भारतीय राजस्व सेवा (IRS)?

उत्तर – भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS)

प्रश्न 50 (आसान). प्रांतीय सेवाओं की भर्ती कौन सा आयोग करता है? UPSC या SPSC?

उत्तर – SPSC (राज्य लोक सेवा आयोग)

प्रश्न 51 (मध्यम). सामाजिक समावेशन के लिए सिविल सेवाओं में क्या नीतियां अपनाई गई हैं?

उत्तर – सामाजिक समावेशन के लिए सिविल सेवाओं में आरक्षण की नीतियां अपनाई गई हैं, ताकि अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्गों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व मिल सके।

प्रश्न 52 (कठिन). एक 'भारतीय पुलिस सेवा' (IPS) अधिकारी को केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त किए जाने के बावजूद, वह किसी राज्य में कैसे काम कर सकता है? समझाओ।

उत्तर – IPS अधिकारी 'अखिल भारतीय सेवा' का हिस्सा होते हैं। इन्हें केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है, लेकिन उनकी सेवाओं को किसी भी राज्य के 'कैंडर' में आवंटित किया जा सकता है। वे उस राज्य की पुलिस बल के हिस्से के रूप में कार्य करते हैं और राज्य सरकार के अधीन होते हैं, लेकिन उनकी 'अंतिम नियंत्रण शक्ति' केंद्र सरकार के पास होती है। यह व्यवस्था केंद्र और राज्य के बीच 'सहयोग' सुनिश्चित करती है।

» नौकरशाही में राजनीतिक हस्तक्षेप और उत्तरदायित्व

प्रश्न 53 (आसान). नौकरशाही में राजनीतिक हस्तक्षेप का क्या अर्थ है?

उत्तर – जब राजनेता अपने व्यक्तिगत या दलगत लाभ के लिए सरकारी अधिकारियों के कामकाज में अनुचित दखलअंदाजी करते हैं।

प्रश्न 54 (आसान). नौकरशाही की 'राजनीतिक तटस्थता' क्यों जरूरी है?

उत्तर – ताकि अधिकारी बिना किसी भेदभाव या पक्षपात के, नियम और कानून के अनुसार काम कर सकें।

प्रश्न 55 (मध्यम). सूचना का अधिकार (RTI) नौकरशाही को कैसे अधिक उत्तरदायी बनाता है?

उत्तर – RTI से नागरिक सरकारी कामकाज की जानकारी मांग सकते हैं, जिससे पारदर्शिता बढ़ती है और अधिकारियों की जवाबदेही तय होती है।

प्रश्न 56 (कठिन). क्या लोकतंत्र में निर्वाचित प्रतिनिधियों का प्रशासन पर पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए? अपने उत्तर का समर्थन करें।

उत्तर – नहीं, पूर्ण नियंत्रण से नौकरशाही नेताओं के हाथ का खिलौना बन सकती है। नियंत्रण जरूरी है, लेकिन 'स्वतंत्रता और तटस्थता' भी उतनी ही जरूरी है ताकि नौकरशाही दक्षता से काम कर सके और जनता के प्रति जवाबदेह रहे, न कि सिर्फ नेताओं के प्रति। यह संतुलन लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. सरकार के 'कार्यपालिका' अंग की भूमिका को समझाइए और बताइए कि इसमें कौन-कौन शामिल होता है।

› सबसे पहले, 'कार्यपालिका' की परिभाषा देंगे: यह सरकार का वह अंग है जो विधायिका द्वारा बनाए गए कानूनों और नीतियों को ज़मीन पर लागू करता है और प्रशासन को चलाता है।

› फिर समझाएंगे कि इसके मुख्य कार्य क्या हैं: कानूनों को लागू करना, देश का प्रशासन चलाना, और कभी-कभी नीति निर्माण में भी भाग लेना।

› अंत में, बताएंगे कि इसमें कौन-कौन शामिल होता है: इसमें सिर्फ उच्च राजनीतिक पदाधिकारी (जैसे राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री) ही नहीं बल्कि पूरा प्रशासनिक ढाँचा (जैसे सिविल सेवा के सदस्य, यानी IAS, IPS अधिकारी और अन्य सरकारी कर्मचारी) भी शामिल होता है।

उत्तर – कार्यपालिका सरकार का वह अंग है जो कानूनों को लागू करता है और प्रशासन चलाता है। इसमें राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री और सभी सिविल सेवक (सरकारी कर्मचारी) शामिल होते हैं।

उदाहरण 2. भारत की कार्यपालिका व्यवस्था किस प्रकार की है और इसकी मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि भारत में 'संसदीय प्रणाली' है।

› दूसरा कदम: संसदीय प्रणाली में 'सामूहिक नेतृत्व' होता है। इसका मतलब है कि सिर्फ एक व्यक्ति नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री और उनका पूरा मंत्रिमंडल मिलकर सरकार चलाता है।

› तीसरा कदम: इसमें कार्यपालिका (प्रधानमंत्री और मंत्री) अपनी सारी नीतियों और कार्यों के लिए 'विधायिका' (संसद) के प्रति 'जवाबदेह' होती है। यानी अगर कोई गलती हो जाए तो संसद उनसे सवाल पूछ सकती है और उन्हें जवाब देना पड़ता है।

› चौथा कदम: भारत में 'राष्ट्रपति' देश का मुखिया होता है (राज्य का प्रधान), लेकिन 'प्रधानमंत्री' सरकार का मुखिया होता है (सरकार का प्रधान)। राष्ट्रपति की शक्तियाँ नाममात्र की होती हैं, जबकि प्रधानमंत्री और मंत्रिमंडल के पास असली शक्तियाँ होती हैं।

उत्तर – भारत में संसदीय प्रणाली के तहत सामूहिक नेतृत्व वाली कार्यपालिका है, जिसमें प्रधानमंत्री और उनका मंत्रिमंडल विधायिका के प्रति जवाबदेह होता है, और राष्ट्रपति नाममात्र का प्रधान होता है जबकि प्रधानमंत्री सरकार का वास्तविक प्रधान होता है।

उदाहरण 3. भारत की संसदीय कार्यपालिका प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ बताएं।

› पहला कदम: हमें पहचानना होगा कि भारत में कौन सी कार्यपालिका प्रणाली है। हमारी प्रणाली संसदीय है।

› दूसरा कदम: अब हमें संसदीय प्रणाली के मुख्य गुणों को याद करना होगा। इसमें सबसे पहले सरकार का मुखिया कौन है?

› तीसरा कदम: फिर देश का मुखिया कौन है और उसकी क्या भूमिका है?

› चौथा कदम: क्या सरकार विधायिका के प्रति जवाबदेह है? हाँ, बिल्कुल।

› पांचवा कदम: क्या यह प्रणाली सामूहिक नेतृत्व पर आधारित है या किसी एक व्यक्ति पर?

› अंतिम कदम: इन सभी बिंदुओं को मिलाकर हम अपनी विशेषताएँ बता सकते हैं।

उत्तर – भारत की संसदीय कार्यपालिका की मुख्य विशेषताएँ हैं: प्रधानमंत्री सरकार का वास्तविक प्रमुख होता है और मंत्रिपरिषद् के साथ मिलकर काम करता है। राष्ट्रपति देश का औपचारिक प्रमुख होता है। प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद् विधायिका (संसद) के प्रति जवाबदेह होते हैं। यह सामूहिक नेतृत्व के सिद्धांत पर आधारित प्रणाली है।

उदाहरण 4. श्रीलंका में किस तरह की कार्यपालिका प्रणाली है? इसकी दो मुख्य विशेषताएँ बताएं।

› पहला कदम, पहचानो कि श्रीलंका में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री दोनों होते हैं। 'राष्ट्रपति देश का प्रमुख होता है' और 'प्रधानमंत्री सरकार का प्रमुख होता है'।

› दूसरा कदम, देखो कि क्या प्रधानमंत्री और उनकी मंत्रिपरिषद् विधायिका के प्रति जवाबदेह हैं? हाँ, 'प्रधानमंत्री और उसका मंत्रिपरिषद् विधायिका वेफ प्रति जवाबदेह होता है'।

› तीसरा कदम, इन विशेषताओं को पहचान कर प्रणाली का नाम बताओ। क्योंकि राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री दोनों हैं और प्रधानमंत्री विधायिका के प्रति जवाबदेह हैं, यह 'अर्ध-अध्यक्षात्मक' प्रणाली है।

› चौथा कदम, दो मुख्य विशेषताएँ स्पष्ट करो: (1) राष्ट्रपति देश का मुखिया होता है और (2) प्रधानमंत्री सरकार का मुखिया होता है, और वह विधायिका के प्रति जवाबदेह होता है।

उत्तर – श्रीलंका में 'अर्ध-अध्यक्षात्मक कार्यपालिका' प्रणाली है। इसकी दो मुख्य विशेषताएं हैं: (1) राष्ट्रपति 'देश का प्रमुख' होता है और (2) प्रधानमंत्री 'सरकार का प्रमुख' होता है, तथा प्रधानमंत्री और उसकी मंत्रिपरिषद् 'विधायिका वेफ प्रति जवाबदेह' होती है।

उदाहरण 5. भारतीय संविधान निर्माताओं ने अध्यक्षात्मक प्रणाली के बजाय संसदीय प्रणाली को क्यों चुना?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि संविधान निर्माताओं का मुख्य लक्ष्य क्या था? उनका लक्ष्य एक ऐसी सरकार बनाना था जो 'जनता के प्रति जवाबदेह' हो और 'एक शक्तिशाली कार्यपालिका' भी हो।

› दूसरा कदम: अध्यक्षात्मक प्रणाली में 'मुख्य कार्यकारी के रूप में राष्ट्रपति पर बहुत बल देती है' और 'व्यक्ति पूजा का खतरा बना रहता है'। इसमें 'कार्यपालिका पर विधायिका का नियंत्रण' कम होता है।

› तीसरा कदम: वहीं संसदीय प्रणाली 'कार्यपालिका को जन-प्रतिनिधियों द्वारा प्रभावपूर्ण तरीके से नियंत्रित' करने का मौका देती है। 'कार्यपालिका विधायिका या जनता के प्रतिनिधियों के प्रति उत्तरदायी होगी'।

› चौथा कदम: इसलिए, इन सभी कारणों को देखते हुए, संविधान निर्माताओं ने 'राष्ट्रीय और प्रांतीय दोनों स्तरों पर संसदीय कार्यपालिका की व्यवस्था को स्वीकार किया' ताकि जनता की अपेक्षाओं के प्रति संवेदनशील और जवाबदेह सरकार बने।

उत्तर – संविधान निर्माताओं ने जनता के प्रति जवाबदेह सरकार सुनिश्चित करने, व्यक्ति पूजा के खतरे से बचने और कार्यपालिका पर विधायिका के प्रभावी नियंत्रण के लिए अध्यक्षात्मक प्रणाली के बजाय संसदीय प्रणाली को चुना।

उदाहरण 6. भारतीय राष्ट्रपति के किसी एक विशेषाधिकार का वर्णन करें, और उदाहरण दें कि इसका प्रयोग कब किया जाता है।

› पहला विशेषाधिकार है 'veto power' यानी वीटो शक्ति। इसका मतलब है कि संसद द्वारा पारित किसी भी विधेयक (धन विधेयक को छोड़कर) पर राष्ट्रपति स्वीकृति देने में देरी कर सकते हैं या उसे अपनी स्वीकृति देने से मना कर सकते हैं।

› उदाहरण के लिए, 'in 1986, President Giani Zail Singh did not take any decision on the Indian Post Office (Amendment) Bill.' 1986 में, भारतीय पोस्ट ऑफिस (संशोधन) विधेयक को राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने अपने पास रोक लिया और उस पर कोई निर्णय नहीं लिया।

› उन्होंने इस विधेयक को अपने पास लंबित रखा और इसका वास्तविक परिणाम यह हुआ कि यह विधेयक कानून नहीं बन पाया, क्योंकि राष्ट्रपति का कार्यकाल समाप्त होने के बाद नई सरकार ने इसे दोबारा पेश ही नहीं किया।

उत्तर – राष्ट्रपति के पास 'पॉकेट वीटो' शक्ति होती है, जिससे वह संसद द्वारा पारित किसी भी गैर-धन विधेयक पर बिना समय सीमा के निर्णय को लंबित रख सकते हैं। राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने 1986 में भारतीय पोस्ट ऑफिस (संशोधन) विधेयक को रोककर इस शक्ति का प्रयोग किया, जिससे वह विधेयक कानून नहीं बन पाया।

उदाहरण 7. मान लीजिए संसद ने एक विधेयक पारित किया, जिससे प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लग रहा है। राष्ट्रपति को क्या करना चाहिए, और उनके पास क्या विशेषाधिकार हैं?

› पहला कदम: राष्ट्रपति को यह विधेयक कानून बनने से पहले अपनी स्वीकृति के लिए भेजा जाएगा।

› दूसरा कदम: राष्ट्रपति को लगेगा कि 'सलाह में कुछ गलती है या कानूनी रूप से कुछ कमियां हैं', या यह 'देश के हित में नहीं है'।

› तीसरा कदम: राष्ट्रपति अपने 'विशेषाधिकार' का उपयोग करते हुए, मंत्रिपरिषद् से इस विधेयक पर 'पुनर्विचार करने के लिए कह सकते हैं'।

› चौथा कदम: अगर मंत्रिपरिषद् फिर भी वही सलाह देती है, तो राष्ट्रपति उसे मानने के लिए बाध्य होंगे। लेकिन अगर राष्ट्रपति 'पॉकेट वीटो' का प्रयोग करना चाहें, तो वह विधेयक को अनिश्चित काल के लिए अपने पास लंबित रख सकते हैं, जैसा कि ज्ञानी जैल सिंह ने किया था।

उत्तर – इस स्थिति में राष्ट्रपति को मंत्रिपरिषद् से विधेयक पर पुनर्विचार का आग्रह करना चाहिए। यदि आवश्यकता हो, तो वे 'पॉकेट वीटो' का प्रयोग कर सकते हैं, जिससे विधेयक कानून बनने से रुक सकता है या इसमें देरी हो सकती है।

उदाहरण 8. अगर भारत के राष्ट्रपति अपने पद से त्यागपत्र दे देते हैं, तो क्या होगा और उपराष्ट्रपति की क्या भूमिका होगी?

- › स्टेप 1: जब राष्ट्रपति अपना 'त्यागपत्र' देते हैं, तो उनका पद 'रिक्त' हो जाता है।
- › स्टेप 2: ऐसी स्थिति में, संविधान के अनुसार, 'भारत का उपराष्ट्रपति' तुरंत 'कार्यवाहक राष्ट्रपति' बन जाता है।
- › स्टेप 3: उपराष्ट्रपति 'कार्यवाहक राष्ट्रपति' के रूप में तब तक काम करेगा जब तक नया राष्ट्रपति 'निर्वाचित' नहीं हो जाता।
- › स्टेप 4: नए राष्ट्रपति का चुनाव 'जल्द से जल्द' कराया जाता है, आमतौर पर 6 महीने के भीतर।

उत्तर – राष्ट्रपति के त्यागपत्र देने पर, उपराष्ट्रपति 'कार्यवाहक राष्ट्रपति' बन जाते हैं जब तक कि नया राष्ट्रपति चुन नहीं लिया जाता।

उदाहरण 9. भारतीय संविधान के अनुसार प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद् की मुख्य भूमिकाएं क्या हैं और वे राष्ट्रपति से किस प्रकार भिन्न हैं?

- › पहला कदम, हम यह समझेंगे कि 'प्रधानमंत्री वास्तविक कार्यकारी प्रधान' हैं। वे सरकार का नेतृत्व करते हैं और देश की नीतियों को लागू करते हैं।
- › दूसरा कदम, 'मंत्रिपरिषद्' का गठन प्रधानमंत्री करते हैं। इसमें विभिन्न विभागों के मंत्री होते हैं जो अपने-अपने मंत्रालयों का काम देखते हैं। ये सभी 'सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति जवाबदेह' होते हैं।
- › तीसरा कदम, 'राष्ट्रपति औपचारिक या नाममात्र के प्रधान' हैं। वे संविधान के संरक्षक हैं, लेकिन 'वास्तविक शक्तियाँ' प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद् के पास होती हैं, जिनकी सलाह पर ही राष्ट्रपति काम करते हैं।
- › चौथा कदम, मुख्य अंतर यह है कि राष्ट्रपति 'राज्य के मुखिया' हैं, जबकि प्रधानमंत्री 'सरकार के मुखिया' हैं। राष्ट्रपति के नाम पर सारे काम होते हैं, लेकिन फैसले प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद् लेते हैं।

उत्तर – प्रधानमंत्री सरकार के वास्तविक कार्यकारी प्रधान होते हैं जो मंत्रिपरिषद् का नेतृत्व करते हैं और नीतियों का क्रियान्वयन करते हैं। मंत्रिपरिषद् सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति जवाबदेह होती है। राष्ट्रपति केवल नाममात्र के प्रधान होते हैं जो प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद् की सलाह पर ही कार्य करते हैं।

उदाहरण 10. मान लीजिए लोकसभा में कुल 543 सदस्य हैं। 91वें संशोधन अधिनियम, 2003 के अनुसार मंत्रिपरिषद् में अधिकतम कितने सदस्य हो सकते हैं?

- › सबसे पहले हमें लोकसभा की कुल सदस्य संख्या पता होनी चाहिए, जो कि 543 है।
- › अब हमें इसका 15% निकालना है, क्योंकि 'संविधान के अनुसार मंत्रिपरिषद् के सदस्यों की संख्या लोकसभा की कुल सदस्य संख्या के 15 प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकती'।
- › तो, $543 \text{ का } 15\% = (543 \times 15) / 100$
- › $= 81.45$
- › चूंकि मंत्रियों की संख्या भिन्न में नहीं हो सकती, इसलिए हम इसे पूर्णांक में लेते हैं।
- › याद रहे, ये 'अधिकतम' संख्या है, तो 81 मंत्री तक हो सकते हैं।

उत्तर – मंत्रिपरिषद् में अधिकतम 81 सदस्य हो सकते हैं।

उदाहरण 11. कल्पना कीजिए कि किसी चुनाव में किसी भी दल को बहुमत नहीं मिला है। दो बड़े दल, दल 'अ' और दल 'ब', एक तीसरे छोटे दल 'स' के साथ मिलकर सरकार बनाते हैं। दल 'अ' का नेता प्रधानमंत्री बनता है। प्रधानमंत्री की शक्तियाँ पर इस स्थिति का क्या प्रभाव पड़ेगा?

- › पहला कदम: पहचानना कि यह एक गठबंधन सरकार है, क्योंकि किसी एक दल को बहुमत नहीं मिला।
- › दूसरा कदम: यह समझना कि गठबंधन सरकार में प्रधानमंत्री की शक्तियाँ थोड़ी सीमित हो जाती हैं।
- › तीसरा कदम: प्रधानमंत्री को केवल अपनी पार्टी के हितों को नहीं देखना होगा, बल्कि सहयोगी दल 'ब' और 'स' के हितों और मांगों का भी ध्यान रखना होगा।
- › चौथा कदम: प्रधानमंत्री को मंत्रियों का चयन, नीतियों का निर्धारण और महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय सहयोगी दलों से 'परामर्श' और 'समझौता' करना पड़ेगा।
- › पांचवां कदम: प्रधानमंत्री एक 'नेता' से अधिक 'मध्यस्थ' की भूमिका में होगा, क्योंकि उसे अलग-अलग दलों के बीच सामंजस्य बिठाना होगा।
- › छठा कदम: इससे प्रधानमंत्री की निर्णय लेने की क्षमता पर कुछ 'अंकुश' लगेगा और उसे अधिक लचीला होना पड़ेगा।

उत्तर – इस गठबंधन सरकार में प्रधानमंत्री की शक्तियाँ कम होंगी। उसे सहयोगी दलों से परामर्श करना होगा और उनकी मांगों को भी पूरा करना होगा, जिससे वह एक नेता से अधिक मध्यस्थ की भूमिका निभाएगा।

उदाहरण 12. स्थायी कार्यपालिका या नौकरशाही का मुख्य कार्य क्या है?

- › पहला कदम है समझना कि 'स्थायी कार्यपालिका' कौन होती है - ये वो 'गैर-निर्वाचित कर्मचारी' होते हैं जो सरकार के लिए स्थायी रूप से काम करते हैं।
- › दूसरा, इनका 'कार्य' क्या है? 'The permanent executive is the bureaucracy' – ये अधिकारी मंत्रियों द्वारा बनाई गई नीतियों को 'सही ढंग' से लागू करते हैं।
- › तीसरा, 'They assist ministers in formulating and implementing policies.' मतलब, ये सिर्फ लागू ही नहीं करते, बल्कि अपनी 'विशेषज्ञता' के आधार पर मंत्रियों को नीतियां बनाने में 'सलाह' भी देते हैं।
- › चौथा, ये 'राजनीतिक रूप से तटस्थ' रहते हैं, यानी किसी भी 'पार्टी' का समर्थन नहीं करते, बल्कि 'निष्पक्ष' होकर काम करते हैं।

उत्तर – स्थायी कार्यपालिका या नौकरशाही का मुख्य कार्य सरकार की नीतियों को ज़मीन पर लागू करना, मंत्रियों को नीति निर्माण में तकनीकी सहायता देना और राजनीतिक रूप से तटस्थ होकर प्रशासन चलाना है।

उदाहरण 13. भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) और भारतीय विदेश सेवा (IFS) में क्या मुख्य अंतर है, और इनकी भर्ती कौन करता है?

- › पहला अंतर यह है कि 'भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS)' एक 'अखिल भारतीय सेवा' है। 'It serves both the Central and State Governments', यानी इसके अधिकारी केंद्र और राज्य दोनों सरकारों के लिए काम करते हैं। उन्हें किसी भी राज्य में 'पोस्ट' किया जा सकता है।
- › दूसरा, 'भारतीय विदेश सेवा (IFS)' एक 'केंद्रीय सेवा' है। 'It exclusively serves the Central Government', यानी इसके अधिकारी सिर्फ केंद्र सरकार के अधीन काम करते हैं और उनका मुख्य काम 'विदेशों में भारत का प्रतिनिधित्व' करना होता है।
- › इन दोनों सेवाओं के लिए 'भर्ती प्रक्रिया' 'संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)' द्वारा आयोजित की जाती है। 'UPSC conducts the Civil Services Examination' जिसके माध्यम से इन अधिकारियों का चयन होता है।

उत्तर – IAS एक अखिल भारतीय सेवा है जो केंद्र और राज्य दोनों के लिए काम करती है, जबकि IFS एक केंद्रीय सेवा है जो केवल केंद्र के लिए काम करती है और विदेशों में भारत का प्रतिनिधित्व करती है। दोनों की भर्ती UPSC द्वारा की जाती है।

उदाहरण 14. नौकरशाही में राजनीतिक हस्तक्षेप के क्या नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं और लोकतांत्रिक सरकार में नौकरशाही को अधिक उत्तरदायी कैसे बनाया जा सकता है?

- › पहला, नकारात्मक परिणाम को समझो: राजनीतिक हस्तक्षेप से नौकरशाह 'डर कर' या 'झुक कर' काम कर सकते हैं, जिससे उनकी 'निष्पक्षता' और 'दक्षता' खत्म हो जाती है। 'They become a toy in the hands of politicians.' वे 'जनता की भलाई' की जगह 'नेताओं की इच्छा' पूरी करने लगते हैं, जिससे आम लोगों को न्याय नहीं मिलता।
- › दूसरा, उत्तरदायी बनाने के उपाय: 'Right to Information (RTI) like steps can make the bureaucracy more accountable and sensitive.' सूचना का अधिकार (RTI) जैसे कानून नौकरशाही को 'पारदर्शी' बनाते हैं, ताक़िलोग जान सकें कि क्या हो रहा है।
- › तीसरा, 'नैतिक मूल्यों' और 'आचार संहिता' (Code of Conduct) का सख्ती से पालन करवाना चाहिए। अधिकारियों को 'political neutrality' यानी राजनीतिक तटस्थता बनाए रखने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- › चौथा, 'स्वतंत्र और मजबूत निगरानी तंत्र' (Independent monitoring mechanisms) बनाना चाहिए, जो नौकरशाहों के कामों पर नज़र रख सके और उनकी जवाबदेही तय कर सके।

उत्तर – राजनीतिक हस्तक्षेप से नौकरशाही की निष्पक्षता, दक्षता और जनता के प्रति संवेदनशीलता कम होती है। इसे अधिक उत्तरदायी बनाने के लिए RTI, नैतिक मूल्यों का पालन, आचार संहिता और स्वतंत्र निगरानी तंत्र जैसे कदम आवश्यक हैं।

बोर्ड परीक्षा के लिए खास

- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर 'संसदीय कार्यपालिका की विशेषताएं' पर सीधा सवाल आता है, इसलिए प्रधानमंत्री की वास्तविक शक्ति और राष्ट्रपति की औपचारिक भूमिका का अंतर स्पष्ट करना ज़रूरी है।
- यह सवाल बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि भारत ने संसदीय प्रणाली क्यों अपनाई। इसके मुख्य कारणों को बिंदुवार याद रखें।
- राष्ट्रपति की औपचारिक और वास्तविक शक्तियों में अंतर पर अक्सर प्रश्न आते हैं। उनके विशेषाधिकारों (पुनर्विचार, वीटो, PM नियुक्ति) को उदाहरण के साथ तैयार करें।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'President's discretionary powers' पर सीधा प्रश्न आ सकता है, खासकर पॉकेट वीटो और गठबंधन सरकारों में PM की नियुक्ति पर।
- उपराष्ट्रपति के चुनाव प्रक्रिया और राष्ट्रपति की अनुपस्थिति में उनकी भूमिका से संबंधित प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में पूछे जाते हैं, इसे अच्छे से समझना।
- यह विषय 'दीर्घ उत्तरीय' प्रश्नों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री की भूमिका, मंत्रिपरिषद के गठन और राष्ट्रपति से उनके संबंधों पर प्रश्न अक्सर आते हैं।
- यह 'सामूहिक उत्तरदायित्व' वाला सिद्धांत बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर 3 या 4 नंबर के प्रश्न में पूछा जाता है। इसे उदाहरण के साथ अच्छे से तैयार कर लेना।
- यह प्रश्न बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर पूछा जाता है कि गठबंधन राजनीति प्रधानमंत्री की शक्तियों को कैसे प्रभावित करती है। इसे अच्छे से तैयार कर लेना।
- स्थायी कार्यपालिका की भूमिका, संरचना और उसकी राजनीतिक तटस्थता (political neutrality) पर अक्सर 'लंबे उत्तर' वाले प्रश्न आते हैं। इसे अच्छे से तैयार करना, बच्चों।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'नौकरशाही की चुनौतियाँ' या 'उत्तरदायी प्रशासन के लिए उपाय' पर अक्सर निबंध या दीर्घ उत्तरीय प्रश्न आते हैं।

एक नज़र में रिवीज़न

- › संसदीय कार्यपालिका: प्रधानमंत्री वास्तविक प्रमुख, राष्ट्रपति/राजा औपचारिक, विधायिका को जवाबदेह।
- › भारत ने जवाबदेही, नियंत्रण, व्यक्ति पूजा से बचने हेतु संसदीय कार्यपालिका चुनी।
- › राष्ट्रपति औपचारिक प्रधान, मंत्रिपरिषद सलाह से कार्य, कुछ विशेषाधिकार।
- › राष्ट्रपति के विशेषाधिकार: पुनर्विचार आग्रह, पॉकेट वीटो, PM नियुक्ति में विवेक।
- › उपराष्ट्रपति: 5 साल कार्यकाल, राज्यसभा अध्यक्ष, राष्ट्रपति की अनुपस्थिति में कार्यवाहक।
- › PM व मंत्रिपरिषद वास्तविक कार्यकारी, राष्ट्रपति नाममात्र; PM मुखिया, मंत्रिपरिषद सामूहिक जवाबदेह।
- › 91वें संशोधन से मंत्रिपरिषद का आकार लोकसभा के 15% तक सीमित; सामूहिक उत्तरदायित्व लोकसभा के प्रति।
- › प्रधानमंत्री की शक्तियाँ (मंत्रिपरिषद नियंत्रण, लोकसभा नेतृत्व) गठबंधन राजनीति में मध्यस्थता से प्रभावित होती हैं।
- › नौकरशाही: सरकार के स्थायी, गैर-निर्वाचित अधिकारी, नीति लागू करते हैं।
- › राजनीतिक हस्तक्षेप से नौकरशाही की तटस्थता प्रभावित, RTI से उत्तरदायित्व बढ़ता।